www.thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : ०६ ● २८ फरवरी २०१७ फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वितीया संवत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १६२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११७

शिवभक्त! जानें ज्योतिर्लिंगों का सच

-आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

जगत् में ईश्वर, जीव, प्रकृति ३ अनादि सत्ताएँ हैं यह विख्यात है। यह ख्याति = प्रसिद्धि वेदादि शास्त्रों से सम्पुष्ट एवं सुप्रमाणित है। इनमें ईश्वर जीव का उपास्य है, जीव उपासक है, भोक्ता है एवं प्रकृति भोग्य है, भोग की साधन है, यह भी वेदादि शास्त्रों का सत्य सार है।

स्वस्ति दाता शिव ईश्वर–

इस उपास्य ईश्वर के जिस प्रकार अनेक गुण, कर्म, स्वभाव हैं, वैसे ही इस ईश्वर के अनेक अभिधान भी हैं। यह ईश्वर जहाँ महेश्वर, शम्भू, प्रभु, विभु, विष्णु आदि नामों से कहा जाता है, वहीं वह जगत्पिता, जगदाधार, शिव आदि भी कहा जाता है। ईश्वर के ये विशेषण आकुमारं यशः पाणिनेः के सदृश सभी के मन मस्तिष्क में समाहित है। सभी इस जगदाधार ईश्वर से ही स्वस्ति, अविनाश, कल्याण की कामना करते हैं, वह ही इन्हें देता है। वेद में कहा है–

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

ऋ. १/८६/५।।

अर्थात् वयम् = हम, तम् = उस, ईशानम्= समस्त सृष्टि के स्रष्ठा ज्ञान प्रदाता ईश्वर को, जगतः = जंगम, चलायमान, तस्थुषः = स्थावर जगत् के, पतिम् = स्वामी ईश्वर को, धियं जिन्वम् =बुद्धि विवेक को बढ़ाने वाले ईश्वर को (जिवि प्रीणनार्थाः), अवसे = रक्षा हेतु, हूमहे = स्तुति का केन्द्र बनाते हैं, आहूत करते हैं, यथा = जिससे, पूषा= पोषक परमेश्वर, नः= हमारे, वेदसाम्= विद्यादि धनों का, असत्= देने वाला होवे, वृधे= वृद्धि के लिए, रक्षिता= रक्षा करने वाला, पायुः पालन करने वाला, अदब्धः= हिंसारहित, स्वस्तये= कल्याण के लिए होवे।

मन्त्र से स्पष्ट है कि ईश्वर चराचर सम्पूर्ण जगत् का पतिः= स्वामी, आधार, आश्रय है। ईश्वर ही सभी पदार्थ व स्वस्ति= कल्याण का प्रदाता है।

एक ईश्वर, अनेक स्वरूप –

जगदाधार ईश्वर एक है, सर्वव्यापक, निराकार, अजर, अमर, नित्य आदि स्वरूप वाला है। उपनिषद् का वचन है–

य एकोऽवर्णो बहुधा शक्तियोगाद्वर्णाननेकान्निहितार्थो दधाति।
वि चैति चान्ते विश्वमादौ स देवः स नो बुद्धया शुभया संयुनक्तु।।
श्वेताश्वतर उपनिषद् ४/१।।

अर्थात् यः= जो, एकः= अद्वितीय, अवर्णः= रंग, रूपरहित, निराकार, बहुधा=बहुत प्रकार से, शक्ति–योगात्= सामर्थ्यों द्वारा, अनेकान् वर्णान्= अनेक रंग, रूप की आकृतियों को, निहितार्थः= प्रयोजन सिद्ध करने के लिए, दधाति=पुष्ट करता है, बनाता है, च=और, अन्ते=प्रलय काल में, विश्वम्=सवजगत् को, वि एति=संगृहीत करता है, समेटता है, च=और आदौ= सृष्टि के आदि में, सः देवः= वह ईश्वर ही विद्यमान रहता है, सः= वह ईश्वर, नः=हमको, शुभया बुद्धया=शुभ बुद्धि से, संयुनक्तु= संयुक्त करे।

उपनिषद् बचन में ईश्वर के निराकार, अद्वितीय स्वरूप का प्रतिपादन है। यही निराकार, अद्वितीय, सर्वपोषक, धारक, ईश्वर शिवः= कल्याणकारी कहा जाता है। मन्त्र है–

सजूर्देवेभिरपां नपातं सखायं कृध्वं शिवो नो अस्तु।। ऋ. ७/३४/१५।।

अर्थात् सजूः= सभी पदार्थों में विद्यमान ईश्वर, देवेभिः=दिव्य सामर्थ्यों से, अपां नपातम्= व्यापक, न टूटने वाली, सखायम्=हमारी मित्रता को, कृध्वम्=कर देवे,

शेष पृष्ठ -४ पर

वेदामृतम्

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः[१०], सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि[११]।
तितिक्षन्ते अभिशस्तिं जनानाम्[१२], इन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः[१३]।।

ऋग् ३.३०.१

हे इन्द्र! हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! अध्यात्म-मार्ग में अनुभव रखने वालें साधकों से मैंने सुना है कि भक्ति करते-करते जब तेरा भक्त तझमें तन्मय हो जाता है, तब तेरे पास से काई अलौकिक प्रज्ञान की धारा भक्त के हृदय की ओर प्रवाहित होती है, जिससे सिंचित हो वह संतृप्त हो जाता है। उस दिव्य प्रज्ञान को पाकर तेरे यष्टा के मन में किसी प्रकार के सन्देह या अन्तर्द्वन्द्व अविशिष्ट नहीं रहते। उस प्रज्ञान के प्रकाश में वह हस्त- आमलकवत् न केवल अपने कर्तव्य-अकर्तव्य को देख लेता है, किन्तु तेरे स्वरूप का भी स्पष्ट दर्शन कर लेता है, ऋषि बन जाता है। इस प्रज्ञान के लिए वैदिक शब्द 'प्रकेत' है। इसी 'प्रकेत' को पाने के लिए ये सांसारिक जन सौम्य गुणों को धारण कर, तेरे सखा बनकर, तेरी चाहना करते हैं। वे भक्ति रस के सोम को अभिषुत करते हैं, अन्तःकरण में भक्ति की धारा को प्रवाहित करते हैं। वे तेरे प्रति प्रीतिकारक स्तुति-वचनों के उपहार को प्रस्तुत करते हैं। वे अपने इन्द्रिय, मन, बुद्धि, प्राण, आत्मा आदि को हविष्यान्न बनाकर तुझे समर्पित करते हे। तेरी भक्ति और आत्म समर्पण में वे ऐसे लवलीन हो जाते हैं कि उन्हें संसारी लोगों की बनाई हुई मर्यादाओं पर चलने की या उनके रीति-रिवाजों को पालान करने की सुध ही नहीं रहती। वे तो बस तेरे प्रति दीवाने रहते हैं। अनेक संसारी लोग असूया से प्रेरित हो उनपर अप्रसन्न होते हैं, उनकी भरपूर निन्दा करते हैं, उन्हें छद्म भक्त, पाखण्डी, और न जाने क्या-क्या कहते हैं। वे सब-कुछ सहन करते हैं, पर तुम्हारे प्रति अपनी भक्ति-प्रवणता को नहीं छोड़ते। परिणामतः वे तुम्हारे प्रकेत की स्त्रोतस्विनी में स्नान करके ही रहते हैं। हे प्रभु! हम भी तुम्हारे 'प्रकेत' को पाने की अभीसा से तुम्हें आत्म-समर्पण कर रहे हैं। हमारी अभिलाषा पूर्ण करो।

साभार - वेदमञ्जरी

'महर्षि दयानन्द के बोध ने संसार को दिशा दी''

–डॉ० धीरज सिंह

आर्य समाज, अरनिया खुर्जा, जनपद बुलन्दशहर द्वारा आयोजित 'ऋषि बोधोत्सव' दिनांक १८ फरवरी से २० फरवरी २०१७ तक बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के बीच मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के कार्यवाहक प्रधान डा० धीरज सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि ''महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिवरात्रि पर्व पर हुए आत्मबोध ने सारे भूमण्डल पर परिवर्तन की लहर ला दी है। स्वामी जी ने जीवन पर्यन्त साकार पूजा का दृढ़ता पूर्वक खण्डन किया। विरोधियों ने कौन–कौन से कष्ट महर्षि को नहीं दिये– पत्थर मारे, विष दिया, अस्त्र–शस्त्र चलाये, काँच पिलाई, परन्तु वह कभी पीछे नहीं हटे बल्कि कुन्दन की भाँति तप कर ऋषि और तेजस्वी हो गये। युगों के बाद किसी ऋषि ने भारत भूमि पर सनातन वैदिक उद्घोष के द्वारा लोगो को जगाया था। भारतीय जनमानस में एक नयी चेतना लाने का अद्भुत कार्य यदि किसी ने किया है तो वह महर्षि देव 'दयानन्द' ने किया है, चाहे वह देश की स्वतंत्रता हो, वैदिक उपासना पद्धति हो, पाखण्ड खण्डन हो, दलितों का उद्धार हो, राष्ट्रीय शिक्षा से सम्बन्धित मूल तत्व हो, धार्मिक कार्यों से जुड़ी बातें हो या हिन्दी के प्रचार–प्रसार की बात हो, महर्षि के अनेक उपकार हम सभी लोगों पर हैं।

महर्षि के लिखे ग्रन्थों के स्वाध्याय से अनेक लोगों ने वैदिक धर्म को ग्रहण कर, एक ईश्वर के उपासक बन गये। आज हर आर्य को पुनः लोगों को जगाना होगा नहीं तो समस्यायें आज तब से ज्यादा गम्भीर व चिन्ता जनक हैं। ''कृण्वन्तों विश्वम् आर्यम्'' मात्र उद्घोष बनकर न रह जाये। हिन्दुत्व पर जब भी खतरा आया है आर्य समाज ने ढाल बनकर उसका मुकाबला किया है विधर्मियों को मुँह तोड़ उत्तर आर्य समाज ने देकर उनका मुँह अनेकों बार बन्द किया है। अब पुनः से समस्यायें विकराल होती जा रही हैं। हमें ऋषि के बताये मार्ग का अनुगमन् करते हुए वेदों की ओर लौटना होगा तभी समस्त मानव जाति का कल्याण होगा।

डॉ. धीरज सिंह
कार्यवाहक प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

चुनाव का व्यवसायीकरण

प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय ब्रांडिंग कन्सल्टिंग कम्पनी साची एण्ड साची को मुख्य अधिकारी रिचर्ड–हटिंग्टन के अनुसार राजनीति में झूठ बोलना अब सबसे ज्यादा प्रभावशाली होता है अर्थात जनता को वही कहना है जो जनता सुनना पसंद करती है। यानी झूठ बोलकर चुनाव जीता जा सकता है।

इसका ताजा उदाहरण अमेरिका का २०१६ का राष्ट्रपति चुनाव है जिसमें अमेरिकी मीडिया हिलोरी क्लिंटन के विजयी होने की घोषणा कर रहा था लेकिन जीते डोनाल्ड ट्रंप जिन्होंने अपने ''मेक अमेरिका ग्रेट अगेन'' नारे को २०१२ में ही रजिस्टर्ड करा लिया था। इससे यह प्रमाणित हो गया कि लोगों को तथ्यों और आंकड़ों के द्वारा प्रभावित नहीं किया जा सकता है।

अमेरिका के १९६० के चुनाव में भी राष्ट्रपति जॉन एफ केनेडी ने भी जनसंचार साधनों का सबसे ज्यादा उपयोग किया था जब वह रिचर्ड– निक्सन के विरूद्ध चुनाव लड़ रहे थे। वही सन् १९८० के चुनाव में रोनाल्ड रीगन अपनी चुनावी सभाओं में अमेरिकी झण्डे का उपयोग करके राष्ट्रभक्त के रूप में विजयी हुए। वहीं १९९२ व १९९६ के अमेरिकी चुनाव में प्रचार का तरीका बदल कर बिलक्लिंटन ने वार रूम प्रणाली का प्रयोग अपने प्रचार के रूप में किया। जीतने के बाद राष्ट्रपति आवास का उपयोग भी जनता के सुनने के मूड के अनुसार किया गया। वहीं २००० तथा २००४ के चुनावों में जार्ज डब्लू ब्रुश ने अपने प्रतिद्वन्दी के जॉनकेरी के विरूद्ध विरोधी नकारात्मक प्रचार की प्रणाली अपनायी। सन् २००८ के अमेरिकी चुनाव में ''यश वी कैन'' के श्लोगन के साथ अत्यन्त प्रभावपूर्ण तरीके से बराक ओबामा ने चुनाव लड़ा जो सोशल मीडिया, बिग डाटा तथा माइक्रोटारगेटिंग प्रणाली पर आधारित ''ओबामा माडल'' कहा गया।

भारत के पिछले लोक सभा चुनाव में भाजपा मुख्यालय को 'वार रूम' की तरह प्रयोग तथा मोदी का आक्रामक अंदाज विजय का कारण बना। ''अबकी बार मोदी सरकार'' का नारा काफी मुखर व प्रभावी रहा था। अभी हाल में सम्पन्न हो रहे राज्यों के विधान सभा चुनावों में लगभग सभी राष्ट्रीय पार्टियाँ मार्केटिंग के इन तरीकों का खुलकर प्रयोग कर रहे हैं। आने वाले समय में इन तरीको का उपयोग और बढ़ने की प्रबल सम्भावना है। क्योंकि वर्ष २०१४ के लोकसभा चुनाव में भाजपा के ''चाय पर चर्चा'' के बाद २०१६ में राहुल गाँधी की ''खाट पर चर्चा'' काफी चर्चित व मुखर विषय रहा था।

भविष्य में होने वाले चुनावों में व्यवसायिक तरीकों की तरह ब्रांडिग, पी. आर., सोशलमीडिया के तरीके ज्यादा प्रभावी होने की उम्मीद हैं, क्योंकि मार्केटिंग विशेषज्ञ चुनाव लड़ने की प्रणाली तय करेंगे। राजनीतिक पार्टियों को अपने कार्यक्रम व घोषणा पत्र के आधार पर जीतना मुश्किल लग रहा है सभी पार्टियों में कार्यकर्त्ताओं का प्रभाव धीरे–धीरे कम होता जा रहा है। भारतीय राजनीति में बदलाव का यह तरीका अशिक्षित, और ग्रामीणों पर कितना प्रभावी होगा यह आने वाला भविष्य तय करेगा। राजनीति में भी विज्ञापन विशेषज्ञों का दखल मार्केटिंग, ब्रांडिंग, पी. आर., बिग डाटा, न्यूरो मार्केटिंग, टारगेट मारकेटिंग के सफल उपाय हैं। भारतीय जनतंत्र इसे शायद ही स्वीकार करे। जहाँ भूख, अशिक्षा, स्वास्थ्य बेरोजगारी आदि समस्यायें मुंह फैलाये खड़ी हों वहाँ इस तरह के तरीके बेईमानी लगते हैं। फुटपाथ जिनका आशियाना हो, दो जून खाने के लिए गिड़गिड़ाना, खुशहाल भारत की तकदीर से कोसों दूर लगता है।

– कार्यकारी सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ तृतीय समुल्लासारम्भः

अथाऽध्ययनाऽध्यापनविधिं व्याख्यास्यामः

इत इदमिति यतस्तद्दृश्यं लिंगम्।। –वै० अ०२। आ० २। सू० १०।।

यहां से वह पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, ऊपर, नीचे, जिस में यह व्यवहार होता है उसी को 'दिशा' कहते हैं।

आदित्यसंयोगाद् भूतपूर्वाद् भविष्यतो भूताच्च प्राची। –वै०अ०२।आ० २। सू० १४।।

जिस ओर प्रथम आदित्य का संयोग हुआ है, होगा, उस को पूर्व दिशा कहते हैं। और जहां अस्त हो उस को पश्चिम कहते हैं। पूर्वाभिमुख मनुष्य के दाहिनी ओर दक्षिण और बाईं ओर उत्तर दिशा कहाती है।

एतेन दिगन्तरालानि व्याख्यातानि।। –वै० अ०२। आ० २। सू० १६।।

इस से पूर्व दक्षिण के बीच की दिशा को आग्नेयी, दक्षिण पश्चिम के बीच को नैऋत, पश्चिम उत्तर के बीच को वायवी और उत्तर पूर्व के बीच को ऐशानी दिशा कहते हैं।

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिंगमिति।।–न्याय०अ०१।आ०१।सू० १०।।

जिस में (इच्छा) राग, (द्वेष) वैर, (प्रयत्न) पुरुषार्थ, सुख, दुख, (ज्ञान) जानना, गुण हों वह जीवात्मा हैं वैशेषिक में इतना विशेष है–

प्राणाऽपाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रियान्तर्विकाराः सुखदुःखेच्छा–द्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिंगानि।। – वै० अ०३। आ० २। सू० ४।।

(प्राण) भीतर से वायु को निकालना (अपान) बाहर से वायु को भीतर लेना (निमेष) आंख को नीचे ढांकना (उन्मेष) आंख का ऊपर उठाना (जीवन) प्राण का धारण करना (मनः) मनन विचार अर्थात् ज्ञान (गति) यथेष्ट गमन करना (इन्द्रिय) इन्द्रियों को विषयों में चलाना उन से विषयों का ग्रहण करना (अन्तर्विकार) क्षुधा, तृषा, ज्वर, पीड़ा आदि विकारों का होना, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष और प्रयत्न ये सब आत्मा के लिंग अर्थात् कर्म और गुण हैं।

युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिंगम्।। न्याय० अ०१। आ० १। सू० १६।।

जिस से एक काल में दो पदार्थों का ग्रहण ज्ञान नहीं होता उस को मन कहते हैं। यह द्रव्य का स्वरूप और लक्षण कहा। अब गुणों को कहते हैं–

रूपरसगन्धस्पर्शाः संख्याः परिमाणानि पृथक्त्वं संयोगविभागौ परत्वाऽपरत्वे बुद्धयः सुखदुःखे इच्छाद्वेषौ प्रयत्नाश्च गुणाः।। वै० अ०१। आ० १। सू० ६।।

रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, गुरूत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म और शब्द ये २४ गुण कहाते हैं।

द्रव्याश्रय्यगुणवान् संयोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष इति गुणलक्षणम्।।

वै० अ०१। आ० १। सू० १६।।

गुण उसको कहते हैं कि जो द्रव्य के आश्रय रहै, अन्य गुण का धारण न करे, संयोग और विभाग में कारण न हो, अनपेक्ष अर्थात् एक दूसरे की अपेक्षा न करे उसका नाम गुण है।

श्रोत्रोपलब्धिर्बुद्धिनिर्ग्राह्यः प्रयोगेणाऽभिज्वलित आकाशदेशः शब्दः।।–महाभाष्य।।

जिस की श्रोत्रों से प्राप्ति जो बुद्धि से ग्रहण करने योग्य और प्रयोग से प्रकाशित तथा आकाश जिस का देश है वह शब्द कहता है। नेत्र से जिस का ग्रहण हो वह रूप, जिह्वा से जिस मिष्टान्नादि अनेक प्रकार का ग्रहण होता है वह रस, नासिका, से जिस का ग्रहण होता है वह गन्ध, त्वचा से जिसका ग्रहण होता है वह स्पर्श, एक द्वि इत्यादि गणना जिस से होती है वह संख्या, जिस से तौल अर्थात् हल्का भारी विदित होता है वह परिमाण एक दूसरे अलग होना वह पृथकत्व, एक दूसरे के साथ मिलना वह संयोग एक दूसरे से मिले हुए के अनेक टुकड़े होना वह विभाग, इस से यह पर है वह पर, उस से यह उरे है वह अपर, जिस से अच्छे बुरे का ज्ञान होता है वह बुद्धि, आनन्द का नाम सुख, क्लेश का नाम दुःख, (इच्छा) राग, (द्वेष) विरोध, (प्रयत्न) अनेक प्रकार का बल पुरुषार्थ, (गुरुत्व) भारीपन, (द्रवत्व) पिघल जाना, (स्नेह) प्रीति और चिकनापन, (संस्कार) दूसरे के योग से वासना का होना, (धर्म) न्यायाचरण और कठिनत्वादि (अधर्म) अन्यायाचरण और कठिनता से विरुद्ध कोमलता ये २४ गुण हैं।

उत्क्षेपणमवक्षेपणमाकुञ्चनं प्रसारणं गमनमिति कर्माणि।।

वै० अ०१। आ० १। सू० ७।।

'उत्क्षेपण' ऊपर को चेष्टा करना 'अवक्षेपण' नीचे को चेष्टा करना 'आकुञ्चन' संकोच करना 'प्रसारण' फैलाना 'गमन' आना जाना घूमना आदि इन को कर्म कहते हैं।

क्रमशः अगले अंक में .....

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द के 12 फरवरी को जन्म दिवस पर उनका स्तवन

-मनमोहन कुमार आर्य

ऋर्षि दयानन्द जी का जन्म दिवस हिन्दी तिथि के अनुसार फाल्गुन कृष्ण दशमी संवत् १८८१ विक्रमी और अंग्रेजी तिथि के अनुसार शनिवार, १२ फरवरी सन् १८२५ है। आज अंग्रेजी तिथि के अनुसार उनका १९२ वां जन्म दिवस है। महर्षि दयानन्द का महत्व किस कारण है? इस प्रश्न का उत्तर है कि वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना के कारण उनका महत्व है। उनके समय में वैदिक धर्म विकृत होकर प्रायः मरणासन्न हो रहा था। धड़ाधड़ लोग ईसाई और मुसलमान बनाये जाते थे। हिन्दू जो स्वयं को वैदिक धर्मी कहते हैं, वह वेदों को छोड़कर और भूलकर पुराणों के अनुसार अज्ञानता व अन्धविश्वासों से भरा हुआ जीवन व्यतीत करते थे। अन्य मतों के लोग उनकी कितनी बुराई करें व उनके लोगों का धर्म छुड़ाकर अपने धर्म में सम्मिलित कर लें, इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। एक प्रकार से हिन्दू जाति जड़ व मृतवत् जाति बन गई थी। महाभारतकाल में वेद मतानुयायी आर्य ही सारी दुनिया में थे। न कोई बौद्ध था, न जैन, न यहूदी, पारसी, ईसाई और न मुसलमान और न सिख, सभी अपने आप को सगर्व वैदिक धर्मी व वैदिक मतानुयायी कहते वह मानते थे। ५२०० वर्ष पूर्व समय का चक्र चला, महाभारत का महायुद्ध हुआ जिसमें भीषण हानि हुई, विद्वान व योद्धा मारे गये, समाज कमजोर हुआ, वेदों का पठन पाठन बन्द व कमजोर हुआ, गुरूकुल प्रायः बन्द हो गये और इसके परिणामस्वरूप देश और संसार में अज्ञान फैल गया। इस अज्ञान ने समाज में अन्धविश्वास , पाखण्ड, कुरीतियां व सामाजिक असमानता जैसी विकृतियां स्वतः उत्पन्न हो जाती हैं। इसके कारण देश व समाज निरन्तर कमजोर होता गया और पहले बौद्ध व जैन नास्तिक मतों का अविर्भाव हुआ और कालान्तर में देश से बाहर यहूदी, पारसी, ईसाई व इस्लाम मत अस्तित्व में आये। यह अज्ञान बढ़ता ही गया और इस इस प्रकार ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी का आरम्भ हुआ और सन् १८२५ की १२ फरवरी दिन शनिवार, को गुजरात प्रान्त की मौरवी रियासत में टंकारा नाम कस्बे व गांव में पं० करशनजी तिवारी के घर बालक मूलशंकर का जन्म हुआ जो बाद में स्वामी दयानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए।

महर्षि दयानन्द का सर्वाधिक महत्व उनके वेदोद्धार एवं वेद प्रचार के कार्यों के कारण है। उनके अन्य सभी कार्य भी देश व समाज की दृष्टि से उत्तम व उपयोगी हैं। महर्षि दयानन्द को वेदों का तलस्पर्शी ज्ञान था। वह वेदों के ऐसे ज्ञानी, विद्वान व ऋषि थे जैसा महाभारतकाल के बाद अभी तक उत्पन्न नहीं हुआ। उन्होंने अपने पुरुषार्थ से मूल वेदों को प्राप्त किया। वेदों को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक व ज्ञान षोषित किया। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सिद्ध किया कि वेद किसी मनुष्य व विद्वान के बनाये हुए नहीं अपितु सृष्टि के आरम्भ में सर्वव्यापक व सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा चार ऋषियों को प्रदत्त ज्ञान है जो पूर्ण सत्य व निर्भ्रान्त हैं। मनुष्य को यदि सर्वांगीण उन्नति करनी है तो वह केवल वेदों के अध्ययन, उनके ज्ञान व उनकी शिक्षाओं को जीवन में धारण व पालन करने से ही हो सकती है। वेदाध्ययन से अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि होती है। अपने यथार्थ कर्तव्यों का बोध वेदों से ही होता है, मनुष्य सन्ध्या, उपासना, यज्ञ, अग्निहोत्र, माता–पिता व आचार्यों की सेवा, पूजा व सत्कार कर व अन्यान्य वैदिक मान्यताओं के अनुसार जीवन व्यतीत कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करता है। महर्षि दयानन्द ने सन् १८६३ ई० में स्वामी विरजानन्द सरस्वती से मथुरा में विद्याध्ययन पूरा कर दीक्षा ली और संसार से अविद्या का नाश करने के लिए कार्य क्षेत्र में उतर पड़े। उन्होंने १६ नवम्बर, सन् १८६६ को काशी में लगभग ३० व अधिक शीर्ष विद्वानों से लगभग पचास हजार लोगों की वहां के आनन्द बाग में उपस्थिति में मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ किया जिसमें मूर्तिपूजा शास्त्रविहित सिद्ध न होकर वेदादि शास्त्रों के विरूद्ध सिद्ध हुई। १० अप्रैल, सन् १८७५ को स्वामी जी ने मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज कोई मत व मतान्तर नहीं अपितु वेद प्रचार प्रसार का एक 'भूतो न भविष्यति' आन्दोलन है जिसका मुख्य उद्देश्य संसार से सभी प्रकार की अविद्या, अन्धविश्वास व सामाजिक विकृतियों को दूर कर वेदानुसार मनुष्य जीवन, समाज व देश का निर्माण करना है।

वेद प्रचार को प्रभावशाली रूप से करने के लिए महर्षि दयानन्द ने देश के अनेक भागों में जाकर उपदेश किये, विद्वानों व लोगों का शंका समाधान सहित विद्वानों से वार्तालामप किये और विधर्मियों व विपक्षियों से शास्त्रार्थ आदि किये। इन कार्यों को करने के साथ स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, ऋग्वेद–यजुर्वेद भाष्य आदि अनेक कालजयी ग्रन्थों की रचना की। यह ऐसे ग्रन्थ हैं जैसे महाभारत काल के बाद लिखे नहीं गये। यह अपने आप में एक सम्पूर्ण वैज्ञानिक सत्य से पोषित मानव मात्र ही नहीं अपितु प्राणी मात्र के धर्म ग्रन्थ हैं। इनका पालन कर कोई भी मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करने में सक्षम व समर्थ हो सकता है। इन ग्रन्थों में निहित सत्य ज्ञान से बढ़कर संसार में मुनष्य व उसकी जीवात्मा के लिए कुछ भी नहीं है। भारत का सर्वांगीण पतन मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना वर्णव्यवस्था, सामाजिक अन्याय व भेदभाव तथा नारियों व शूद्र वर्ण के बन्धुओं की शिक्षा के अधिकार पर रोक के कारण हुआ था। महर्षि दयानन्द ने इन सभी अवरोधों को दूर करने के लिए प्राणपण से कार्य किया व आंशिक रूप से सफल भी हुए। यदि संसार के लोगों ने निष्पक्ष भाव से ऋषि दयानन्द के विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों पर ध्यान दिया होता व उन्हें अपनाया होता तो संसार से अधिकांश व सभी समस्याओं का अन्त हो जाता। दुःख है कि अज्ञानता व स्वार्थ के कारण संसार के लोगों ने वैदिक मत की श्रेष्ठ बातों व विचारों को जानने व अपनाने का प्रयास ही नहीं किया जिससे हानि यह हुई कि संसार में सर्वत्र अशान्ति है, पशु–पक्षी दुःख पा रहे हैं, मनुष्य अकाल मृत्यु का शिकार हो रहे हैं, संसार में सर्वत्र असाध्य रोगों की वृद्धि हो रही है, सामाजिक असमानता और गरीबी व अमीरी के बीच खाई बढ़ी है। आज भारत के उत्तर प्रदेश में ही कुछ गरीब परिवार व उनके छोटे–छोटे बच्चे घास की रोटी खाने के लिए विवश हैं। मनुष्य का मन वर्तमान धर्म व संस्कृति ने कैसा बना दिया है कि पैसे वालों को इन पर दया ही नहीं आती और आज भी अमीरों व राजनीतिक दलों के खजाने केवल अपनी सुख–सुविधाओं के लिए होते हैं, गरीबों के दुःखों से शायद किसी को भी कोई सरोकार नहीं है। महर्षि दयानन्द के विचारों व वेद के सिद्धान्तों को क्रियान्वित रूप देने पर इन व ऐसी सभी समस्याओं का समाधान हो जाता। दुःख, महादुःख।

महर्षि दयानन्द के समय में देश अंग्रेजों का गुलाम था। देश की उन्नति के लिए इस गुलामी को उतार फेंकना था। अतः महर्षि दयानन्द ने जहां वैदिक धर्म का प्रचार किया वहीं उन्होंने देश के लिए लोगों को स्वदेशी राज्य के महत्व को भी बताया। उन्होनें अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में घोषणा की कि कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत–मतान्तर के आग्रह रहित, प्रजा पर माता–पिता के समान कृपा, न्याय, और दया के साथ ही विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता। इन पंक्तियों में महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट रूप से अंग्रेजों के विरूद्ध बगावत का सन्देश देकर अपूर्व साहस का परिचय दिया है। उन्होंने कहा कि स्वदेशी राज्य सर्वोपरि उत्तम होता है और विदेशी अर्थात् अंग्रेजों व अन्यों का राज्य कितना भी अच्छा हो स्वदेशी राज्य की तुलना में पूर्ण सुखदायक वा उन्नतिदायक नहीं हो सकता। यह साहस पूर्ण शब्द लिख कर महर्षि दयानन्द ने अंग्रेजों से बगावत कर दी थी। ऐसे उनके अनेक वचन और भी हैं जो उनके ग्रन्थों में यत्र–तत्र विद्यमान हैं। सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में मूर्तिपूजा के प्रकरण में महर्षि ने लिखा है कि 'जब संवत् १९१६ (सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के समय) के वर्ष में तोपों के मारे मन्दिर की मूर्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दी थी तब मूर्ति कहां गई थीं? प्रत्युत बाघेर (गुजरात के) धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते। भला यह तो कहो कि जिस का रक्षक (मन्दिर में पूजी जाने वाली मूर्ति) मार खाय उसके शरणागत (मूर्तिपूजक) क्यों न पीटे जायें? यहां भी महर्षि दयानन्द ने बगावत के स्वर प्रस्तुत किये हैं। यह भी बता दें कि जब महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में यह शब्द लिखे थे तब तक कांग्रेस की स्थापना नहीं हुई थी। कांग्रेस की स्थापना सन् १८८५ में हुई, इसके संस्थापक भी विदेशी थे और उनका उद्देश्य भी देश को आजाद कराना नहीं था। आर्यसमाज से इतर कोई धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक संगठन नहीं था जिसने आजादी की बात की हो। स्वामी जी को ही देश में सबसे पहले आजादी, स्वदेशी, स्वराज्य व सुरराज्य

शेष पृष्ठ -७ पर

www.thearyasamaj.org

शिवभक्त! जानें ज्योतिर्लिंगों .....

पृष्ठ १ का शेष

नः=हमारे लिए, शिवः अस्तु=कल्याणकारी होवे।

मन्त्र में शिवः पद ईश्वर के लिए आया है। यह शिव ईश्वर जगत् के विभिन्न पदार्थ, बल, बुद्धि सुख, शान्ति आदि प्रदान कर, हमारे लिये शिवः= कल्याण प्रदान करता है। वेद ज्ञान द्वारा अज्ञान नष्ट करता है, सूर्य, चन्द्र आदि भौतिक प्रकाश वाले पदार्थों द्वारा अन्धकार को दूर कर, प्रकाश से युक्त करता है।

शिव का अतिरञ्जित रूप शिवलिंगोपासना

सुख शान्ति की अभिकांक्षा में अनुरक्त इस लोक में इस कल्याणकारी शिव ईवर की अति मान्यता व पूज्यता है। खेद की बात है! लोक की अति मान्यता व पूज्यता ने वेद, उपनिषद् आदि में निर्दिष्ट निराकार, कल्याणकारी शिव का स्वरूप ही बदल दिया, निराकार को साकार बना दिया है, एक रात्रि ही अर्पण कर दी है। जो महाशिवरात्रि कही जाती है। इस रात्रि का मास फाल्गुन है, पक्ष कृष्ण व तिथि चतुर्दशी हैं लोक विज्ञात इस शिव व शिवरात्रि पर्व के अतिरञ्जित अनेक महत्व पुराण व पुराणानुकूल ग्रन्थों में वर्णित हैं। साकार बनाये गये शिव के लिंगोपासना का प्रतिपादन है।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी महत्व–

१. पौराणिक कोश के अनुसार प्रलय के पश्चात् ब्रह्मा ने सृष्टि के आरम्भ में रुद्ररूपी शिव को फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को उत्पन्न किया।

२. शिव शंकर ने फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को तांडव नृत्य किया। अपने डमरू के निनाद से वायुमण्डल में ज्ञान, विज्ञान को भर दिया।

३. वायु एवं स्कन्ध पुराण के अनुसार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिव पार्वती का शुभ विवाह हुआ।

शिवलिंग उत्पत्ति– पौराणिक कोश के मतानुसार ब्रह्मा ने सृष्टि के आरम्भ में अपने भौहों से एक देवता उत्पन्न किया, जिसका नाम रुद्र था। वह रुद्र अज, एकपाद्, अहिर्बुध्न्य, पिनाकी, उपराजित, त्र्यम्बक, महेश्वर, वृषाकपि, शम्भु, हरण एवं ईश्वर इन ११ प्रकारों वाला था। यह रुद्र ही शिव कहा गया। इस रुद्र के लिंग और योनि दो रूप हैं, ये रूप पुरुष व स्त्री हैं। शिव के ये रूप सृष्टि को बनाते व नष्ट करते हैं, अतएव शिव को महादेव कहा जाता है।

पौराणिक कोश, पृ० ४४७, मत्स्त पु० ४/५, वायु पु.अ. ३०।।

पुराणों में ज्योतिर्लिंग के उत्पत्ति विषयक अनेक कथानक हैं। यथा– विष्णु की नाभि से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई। उत्पत्ति होने पर ब्रह्मा और विष्णु में झगड़ा हो गया, झगड़े के निर्णयार्थ एक ज्योतिर्लिंग हुआ, वह ज्योतिर्लिंग ज्वाला से परिपूर्ण आदि, अन्त, मध्य से रहित था। ब्रह्मा ने कहा मुझे ज्योतिर्लिंग का अन्त ज्ञात है, मेरे ज्ञान का गवाह केतकी का फूल है। इस बहस में विष्णु बोले मुझे तो इसके आदि का ज्ञान नहीं। विष्णु के इस सत्य कथन से विष्णु बड़े कहलाये, ब्रह्मा छोटे।

ईशान संहिता के अनुसार ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि को हुआ। वहाँ कहा है–

शिवलिंगतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः।

अर्थात कोटि सूर्यों की प्रभा के समान शिवलिंग रूप से ज्यातिर्लिंग प्रकट हुआ, अतः यह महाशिवरात्रि है।

पौराणिक कोश, पृ. ४६५।।

पद्म पुराण का मानना है कि भृगु मुनि के शाप के कारण शिव शंकर की मूर्ति लिंग रूप हुई। पद्प पुराण के अनुसार भृगु मुनि ने शाप तब दिया,, जब देव कौन हो? इस निश्चय के लिए ऋषिगण उनके गृह पर पहुंचे थे और शिवशंकर से मिलना चाहते थे। पर शिव के वाहन नान्दी ने मिलने नहीं दिया, क्योंकि उस समय शिव पार्वती के साथ एकान्त वास में थे। ऋषियों के विशेषतः भृगु के कोप का परिणाम यह शिवलिंग है।

शिव पुराण में वर्णित दारूवन की अश्लील कथानुसार एक बार देवताओं की पत्नियां वन में वसन्तोत्सव मना रहीं थीं, उन्हें देखकर शंकर भोग विलास की मनीषा से नग्न होकर तांडव नृत्य करने लगे। तब देवताओं की पत्नियों के मध्य विद्यमान लक्ष्मी जी ने अपने पति विष्णु जी से शंकर के तांडव नृत्य की शिकायत की। शिकायत सुनकर विष्णु जी ने अपने सुदर्शन चक्र से शिवलिंग के टुकड़े टुकड़े कर दिये, वे टुकड़े जहाँ जहाँ गिरे, वहाँ वहाँ ज्योतिर्लिंग मंदिर बन गये।

शिव पुराण के अनुसार शिवलिंग ज्योतिर्लिंग कहे जाते हैं। इन ज्योतिर्लिंगों की संख्या १२ हैं। वे लिंग है–

१. गुजरात पाटण, प्रभास स्थित– सोमनाथ।

२. कृष्णा नदी के समीप श्रीशैल, आन्ध्र स्थित– मल्लिकार्जुन।

३. उज्जैन मध्यप्रदेश स्थित– महाकाल।

४. नर्मदा तट मान्धाता ग्राम, उज्जैन मध्यप्रदेश स्थित– ओंकार या अम्बेश्वर।

५. देवघर, झारखण्ड स्थित–वैद्यनाथ।

६. पूणे निकट, डाकिनी, महाराष्ट्र स्थित –भीमेश्वर या भीमशंकर।

७. सेतु निकट, तमिलनाडू स्थिति– रामेश्वर।

८. द्वारिका, गुजरात स्थित –नागेश्वर या नागनाथ।

९. वाराणसी स्थित– विश्वेश्वर या विश्वनाथ।

१०. गोदावरी तट स्थित– त्र्यम्बकेश्वर।

११. हिमालय, उत्तरांचल स्थित –केदारेश्वर।

१२. एलोरा निकट, औरंगाबाद स्थित– घृष्णेश्वर या घुश्मेश्वर।

पुराणोक्त उपासना के २ विभाग–

पुराणोक्त शिव की उपासना के २ विभाग हैं। एक वह विभाग है जिसमें हस्त, पादयुक्त प्रतिकृति है, दूसरा विभाग वह है, जो हस्त पाद रहित लिंग रूप है। इस लिंग रूप की ही उपासना की जाती है।

शिवलिंगोपासना के प्रामाण्य के लिए ऋग्वेद के मन्त्रों का भी सहारा लिया जाता है। वे मन्त्र हैं–

न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना शाविष्ठ वेद्याभिः।
स शर्धदर्यो विष्णुस्य जन्तोर्मा शिश्नदेवा अपित गुर्ऋतं नः। ऋ. ७/२१/५।।

स वाजं यातापदुष्पदा यन् त्स्वर्षाता परि सनिष्यन्।
अनर्वा यच्छतदुरस्य वेदों घ्नञ्छिश्नदेवां अभि वर्पसा भूत्।। ऋ. १०/८८/३।।

इन वेदमन्त्रों की भांति उपनिषदों को भी शिवलिंगोपासना के प्रमाण में उपस्थापित किया जाता है। वे स्थल हैं–

यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको यस्मिन्निदं सं च वि चैति सर्वम्। श्वेताश्वतर उप. ४/११।।

यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको विश्वानि रूपाणि यानीश्च सर्वाः।
ऋषिं प्रसूतं कपिलं यस्तमग्रे ज्ञानैर्बिभर्ति जायमानं च पश्येत्।। श्वेताश्वतर उप. ५/२।।

इन मन्त्रों व उपनिषद् के पूर्वापर प्रकरणों द्वारा सुस्पष्ट हो जाता है कि वचनों में कहीं पर भी शिवलिंग उपासना का संकेत नहीं है। मंत्रों में तो मा शिश्नदेवाः, घ्नन् शिश्नदेवाः= कामी न आयें, कामियों को हटावें कहकर सुस्पष्ट ही लिंग उपासना का निषेध है। उपनिषद् वचनों में भी जो योनिम् शब्द आये हैं, वे सम्पूर्ण उत्पत्ति कारण के वाचक हैं, लोक प्रसिद्ध जननेन्द्रिय लिंग के वाचक नहीं।

लिंगोपासना का प्रारम्भ काल–

यह लिंगोपासना महाभारत युद्ध के पश्चात् प्रारम्भ हुई। महाभारत में उपमन्यु के आख्यान में ही सर्वप्रथम शिवलिंगोपासना का वर्णन हुआ है, अन्यत्र नहीं। इस उपासना का उद्भावक वाममार्गीय सम्प्रदाय है, जो व्यभिचार प्रधान समुदाय है।

वाममार्गियों के लिंगोपासना रूप व्यभिचार कर्म का प्रज्ञापन करते हुए महर्षि ने लिखा है– इन वाममार्गी और शैवों ने संगति करके भग लिंग का स्थापन किया, जिसको जलाधारी और लिंग कहते हैं और उसकी पूजा करने लगे। उन निर्लज्जों को तनिक भी लज्जा न आई, कि यह पामरपन का काम हम क्यों करते हैं? सत्यार्थ प्रकाश एका. पृ. २८२।।

महर्षि के इन वचनों से स्पष्ट है कि लिंगोपासना वेदोक्त कर्म नहीं है।

लोक शिवलिंग रूप इन ज्योतिर्लिंगों की उपासना भेड़चाल में करता जा रहा है। इस उपासना का बखान भी लोक बड़ी श्रद्धा से करता है। अभी गत २०१६ १७–२३ नवम्बर को आर. एस. एस. के अध्यक्ष अशोक सिंहल की प्रथम पुण्यतिथि पर आर्यससमाज सम्भाजी नगर, औरंगाबाद द्वारा ऋग्वेद परायण यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसका ब्रह्मत्व मेरे द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मैंने औरंगाबाद का भ्रमण भी किया। औरगाबाद में एक शिव मंदिर, है, उसे दिखाने भी एक भ्राता हमारे साथ गये। उस शिव मंदिर में प्रवेश करते हुए उन्होंने बताया, १२ ज्योतिर्लिंग हैं, उन १२ ज्योतिर्लिंग में यह अन्तिम १२ वा ज्योतिर्लिंग है। मैंने उनकी बात सुनी, कहा कुछ नहीं। किन्तु उनकी बात सुनकर एक विचार आया, कि इनकी १२ ही संख्या क्यों है? १२ से कम या १२ से अधिक क्यों नहीं? साथ ही यह विचार भी आया, यदि यह ज्योतिर्लिंग है तो प्रकाश क्यों नहीं? यहाँ मन्दिर में बिजली के साधन ट्यूबलाइट आदि क्यों लगे हैं?

ज्योतिः शब्दार्थ– शिवभक्तों! मंदिर में जिसे ज्योतिर्लिंग बताया जा रहा है, वह तो अन्धकार का ढेर व पत्थर का टुकड़ा है, ज्योति नहीं। ज्योति तो प्रकाश को कहते हैं। ज्योति शब्द का अर्थ प्रकाश, दीप्ति है। प्रकाश अर्थ वाचक ज्योतिः शब्द द्युत दीप्तौ धातु से द्युतेरिसिन्नादेश्च जः, २/११२ उणादि सूत्र द्वारा इसिन् प्रत्यय व दकार को जकारादेश करके सिद्ध होता है। जिसक व्युत्पत्ति है–

द्योतते प्रकाशते, द्युत्यते प्रकाश्यते वा तत् ज्योतिः ईश्वरोऽग्निः, सूर्यादिकं वा।

अर्थात् जो चमकता है या जिसके द्वारा चमकाया जाता है वह ज्योति कहा जाता है। ईश्वर, अग्नि और सूर्यादि पदार्थ प्रकाश वाले हैं व प्रकाशित करते हैं अतः ये ज्योतिः कहे जाते हैं।

अग्नि परमेश्वर ज्योतिः–

ईश्वर के अनेक नामों में एक नाम अग्नि है। ईश्वर अग्नि भी कहा जाता है। मन्त्र है–

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरूत्मान्
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।

ऋ. १/१६४/४६।।

अर्थात् सः=वह, दिव्यः=प्रकाशमय, सुपर्णः=शोभनीय पालन पोषण करने वाला, गरुत्मान्=बड़ा परमात्मा है, अथ=और उस, एकम् सत्=एकाकी रूप सत्ता वाले ईश्वर को, विप्राः=विद्वान् जन, बहुधा= विविध नामों से, वदन्ति= कहते हैं, उसे, इन्द्रम्= ऐश्वर्यशाली, मित्रम्=मित्ररूप, वरूणम्=वरणीय तथा उस, अग्निम्=अग्रणी, व्यापक परमात्मा को, यमम्= सर्वनियन्ता, मातरिश्वानम्= वायुरूप व्यापक, गतिशील, आहुः= कहते हैं।

मन्त्र का भाव है कि ईश्वर के अनेक अभिधान हैं, उन अभिधानों में अग्नि नाम भी ईश्वर का है।

यह सर्वव्यापक अग्नि परमेश्वर ही ज्योति है, ज्योति देने वाला है। ज्योतिः=ज्ञान रूप प्रकाश एवं भौतिक प्रकाश करने वाला है। यजुर्वेद में कहा है–

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।। यजु० ३/६।।

अर्थात् अग्निः= अग्रणी परमेश्वर, (अग्निरिति पदनाम, निघ. ५/४, अनेन अग्नेर्गत्यर्थकत्वेन ज्ञानरूपत्वात् अग्निः ईश्वरः) ज्योतिः= ज्योतिरूप एवं वेदज्ञान, भौतिक अग्नि, बिजली, सूर्य आदि का प्रकाशक है, ज्योतिः=प्रकाशरूप एवं प्रकाशक परमेश्वर ही, अग्निः= अग्नि है, स्वाहा= यह सत्य वाणी है, कथन है (स्वाहा इति वाङ्नाम, निघ.१/११)।

मन्त्र का सार है कि अग्निः= अग्रणी परमात्मा, ज्योतिः = प्रकाशस्वरूप है, प्रकाशित करने वाला है।

भौतिक अग्नि ज्योतिः भौतिक अग्नि भी ज्योति है। इस पक्ष में मन्त्र का अर्थ है– अग्निः= भौतिक अग्नि पदार्थ, (प्राप्तिहेतुत्वात् अग्निशब्देन भौतिकोऽर्थो गृहयते), ज्योतिः=दीप्ति वाला है, ज्योतिः दीप्ति ही, अग्निः= अग्नि पदार्थ है, स्वाहा= यह सत्य कथन है (स्वाहा इति वाङ्नाम, निघ. १/११)।

मन्त्र से स्पष्ट है अग्नि : = भौतिक अग्नि, ज्योतिः= प्रकाश करता है। यह सर्वविदित है रात्रि में प्रकाश का साधन अग्नि होता है।

सूर्य परेमश्वर ज्योतिः

ईश्वर के अनेक नामों के मध्य सूर्य नाम भी है। अतः वेद में कहा है–

सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। यजु. ३/६।।

शेष पृष्ठ ६ पर

www.thearyasamaj.org

शिव और शिव रात्रि

- श्याम किशोर आर्य सिद्धान्त शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सृष्टादि से महर्षि व्यास तक की परम्परा को पुनः स्थापित करके, वर्तमान काल की मान्यताओं में एक नया अध्याय आरम्भ किया है। वर्तमान पीर, पैगम्बर, नवी, रसूल, आचार्य गुरू, महन्त एवं अवतारों की आपाधापी समाप्त करने से आहवान से, महर्षि का उनके समय से ही घोर विरोध हुआ है और आज भी उनका विरोध चल रहा है वस्तुतः उनका जितना विरोध होता है उतना ही सत्य और भी प्रकाश में आ रहा है। १८२४ की वेद एवं धर्म के विषयक मान्यताओं में कितना अधिक परिवर्तन हो गया इसका प्रमाण इतिहास है।

जो सारे रहस्य स्वार्थ के गर्त में दबे थे आज वे प्रकट होकर अपने लोगों को स्वीकार करने को झकझोर रहे हैं और मानने को बाध्य कर रहे है। यदि हिन्दू धर्म के मुखिया महामहोपाध्यायगण नीलकंठ शास्त्री के महाभारत में प्रक्षेप है इस मत को मान लेते और भागवतादि के गप्पाष्टको को त्यागने को उद्यत् हो जाते तो वह ईसाई धर्म क्यों ग्रहण करते? बाबा वाक्यं या संस्कृत वाकयं या और ब्रह्मवाक्यं प्रमाण के नाम पर अन्ध श्रद्धा छोड़ दी जाती है ईसाई 'ईशा वास्यं' से ईसा मसीह, अदीना–स्याम् का समास युक्त मदीना स्याम से मुसलमान मदीना आदि दिखाकर कर हिन्दुओं को क्यों भरमाते।

महर्षि दयानन्द ने हरिद्वार के कुम्भ पर पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा फहराकर सबको चौका दिया और वेद की महत्ता तथा वैदिक मर्यादाओं की श्रेष्ठता स्थापित की और वैदिक विचार धारा में जोड़ने हेतु उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सर्व प्रथम ईश्वर के एकत्व तथा उसके विभिन्न नामों से जिज्ञासुओं को परिचित कराया।

वेद में ही नही उपनिषदादि तथा पुराणादि ग्रन्थों में भी शिव के अर्थ कल्याणकारी परमात्मा बताये गये हैं। लेकिन शिव को एक व्यक्ति या अनेक देवताओं में एक देवता मानकर पुराणों में जो कल्पनायें की गई है वह अमानवीय है और बुद्धिग्राहय नहीं है। शिव लिंग की उत्पत्ति, शिव के दारूवन विषयक था, उसकी अनुसूया से सम्वाद आदि चरित्र कथायें इतनी गर्हित और अश्लील है कि शर्म को भी शर्म आ जाय। दयानन्द के समकालीन धर्माचार्य उन्हीं को वेदमंत्रों से सिद्ध करने का प्रयास करते थे।

शिव, शंकर और शिवलिंग अति प्राचीन समय से ऐतिहासिक जगत के विषय बने है। ऐतिहासिक मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की सभ्यता में खल–ऊखल की आकृति में, वे शिव की कल्पना कर रहे हैं।

बारह ज्योर्तिलिंग का इतिहास अति प्राचीन माना जा रहा है। जो अपने में अनेक गुत्थियों को समेटे है। विश्व में ब्रह्मा का एक मात्र मन्दिर पुष्कर (अजमेर) में है। शाक्तों की शक्तिपीठ बहुतायत से है। विष्णु मन्दिर में भी विवाद हैं किंवदन्ती है कि बुद्ध के मन्दिरों को हिन्दुओं ने विष्णु मन्दिर बना लिया।

दिगम्बर जैनियों के तीर्थकरों से शैवों के नग्न शिवलिंग बनाये गये। श्वेताम्बर जैनियों के तीर्थकरों से वस्त्रधारण किये बुद्ध एवं विष्णु रूपकल्पित किये गये बोधिसत्व (बुद्धो के) जातक अवतार जैसे विष्णु के अवतारों की कथायें गढ़ी गई।

जैनियों के २४ तीर्थाकरों के स्थापन्न विष्णु के २४ अवतार कल्पित किये गये नाथों व सिद्धों की कथायें जैनियों एवं बौद्धों की कथाओं के रूपान्तर है। या समानान्तर है।

यह महाभारत के पश्चात की आपा धापी का इतिहास है यही समस्त विश्व में अपनी प्रशंसा एवं अन्यों को हेय सिद्ध करने का काल है। इसी काल में पुराणों एवं उनकी कथाओं का प्रणयन हुआ और जिनसे वेद की परम्परायें लुप्त हो गयी।

महाभारत से पूर्व पुराण नहीं थे, ईसाई, पारसी, यहूदी, बौद्ध तथा इस्लाम कोई मत नहीं था। केवल वेदों की मान्यता थी और सारे राजे महाराजे वेदमत को मानते थे तथा उसका पालन करते थे। वेद में एकमेव परमात्मा उपास्य था। उसके गुणों के आधार पर अपने इष्ट की साधना करते थे। समस्तदेवों की पूजा का आधार अग्निहोत्र था।

अग्नि परमात्मा का सर्वप्रसिद्ध नाम था विष्णु आदि की महिमा अग्नि से कम थी। अग्नि में अपने भावों को समर्पित किया जाता था। यह सृष्टि के समस्त प्रहेलिकाओं एवं प्रक्रियों को नाटक रूप में अग्नि होत्र के द्वारा बतलाया जाता था। जिसमें भौतिक अग्नि भौतिक जगत की सिद्धि प्रदान करती थी। आध्यात्मिक अग्नि परमात्मा को प्राप्त कराती थी।

यज्ञ (अग्नि होत्र) प्रक्रिया में रचना, विस्तारण एवं संहार की तीनों प्रक्रिया है। यह तीनों का समुच्चय भाव शिव कल्याण है।

जब यज्ञ वेदी बनती है सृष्टि निर्माण काल की अवस्था की सातो परिधि की प्रक्रिया है यज्ञपात्र, समिधाचयन, अग्न्याधान एवं आज्याहुती सृष्टि निर्माण ब्रह्मा का रूप एवं क्रिया है। यज्ञ में आहुति डाले जाने के उपरान्त ह्वि को अग्नि सहस्त्र, लक्ष तथा अनेकगुणित करके वायुमंडल में फैला (विस्तारित) करके व्याप्त कर देती है– विष्णु वन कर यज्ञ पूर्ण होने पर पूर्णाहुति के उपरान्त यज्ञ में आहुत सामग्री शेष पिण्डात्मक हो जाती है वह शिव के (पिण्ड) लिंग रूप बन जाती है। यह शंकर है यदि इस सामग्री को हम औषधि रूप में प्रयोग करे वो अनेकानेक रोगों तथा दोषों को शमन करने वाली है। और वृक्षों की सर्वोत्तम खाद (खाद्य) है।

जब संसार में वेदों की मर्यादा थी ऋषि मुनि बड़े–बड़े यज्ञ करते थे वे यज्ञ के ब्रह्मा द्वारा कराया यज्ञ समाप्त होने पर श्रद्धालुओं द्वारा परिक्रमा किया जाता है उसी को (शिवलिंग) शिवपिण्डी का अज्ञता वश आरम्भ किया कार्य प्रतीक रूप में हमारे लिये आज बारह ज्योर्तिलिंगों का स्थान बना हुआ है।

यज्ञ कुण्ड की आज्यस्थली यजमान द्वारा घृताहुति देने का स्थान कलात्मक बना होने से विकृत होकर योनि रूप बन गया। यही घृत समस्त रूप से अग्नि को स्थायी प्रदीप्त करता है इसीलिये वाममार्गियों ने घृत के स्थान पर विकृत करके वीर्यराज एवं मदिरा के द्वारा अग्नि प्रदीप्त करते हैं और मैथुन (सम्भोग) के अर्थ में विनियोजित करते है।

जहां वामी एवं शैवों का मेल है वहां शिवलिंग सृष्टि का रूप शिवलिंगाकृति योनि और लिंग रूपात्मक होती है। यह प्रायः समस्त स्थानों (मन्दिरों) में मिलती है क्योंकि वामाचार में स्त्री एवं पुरूष दोनों का होना आवश्यक है। प्रसिद्ध श्लोक है–

मद्यमांस विहिनेन कुर्याद् पूजनं शिवेः।
न तुष्यामि बरारोहे भगलिंगामृतं बिना।।

जिसमें अज्ञानरूपी, विषय भोगों की पराकष्टा है। पुराणों में ब्रह्मा जो यज्ञ–कर्त्ता एवं वेद का प्रवक्ता है। उसकी सती (शिव पत्नी) को दक्ष पिता ने पुत्री एवं दामाद को अश्लील वेषधारी होने कारण यज्ञ में आमंत्रण न मिलने पर सती पति की इच्छा के विरूद्ध पिता के यज्ञ में गई वहां पति (शिव) का अपमान देखकर यज्ञ के कुण्ड में कूदकर प्राण त्याग दिया। इस प्रकार क्रोधित होकर शिव ने दक्ष प्रजापति का यज्ञ नष्ट करके उसे मार दिया गया। और शिव की पूजा स्थापित की गई। यही शिव की पूजा स्थापित किया गया। वही अज्ञान रूपी अब्रह्मा द्वारा प्रतिष्ठा हुई। दक्ष को मारकर पुनः उनके कटे सिर में बकरे का शिर शिव ने जोड़ दिया।

सती अदृश्य हो गई शिव बचे जिनकी स्थापना हुई वही शिव–मात्र शिवलिंग स्थापित किया गया।

सती (दुर्गा) अम्बा जो अल्ला नाम से जानी जाती है अरबी में अल्लाह का मूल रूप धातुज बताया नहीं जा सकता परन्तु संस्कृत में दुर्गा का पर्याय–अल्ला, अक्का, अम्बा है उसकी सभी दक्ष प्रजापति की संतान उपासना करते है शिव को तो मुहम्मद तथा उसका इस्लाम भी काबा से निकाल नहीं सका आज वह संग असवद के रूप में पूजनीय है और प्रत्येक हाजी उसके बोसे को पाने में अपना सौभाग्य मानता है, अल्ला–भी उनके ह्रदय में समाया है।

लिंगमात्र– कावा में और योनिमात्र नासिक में है (त्रयम्बकेश्वर) शिव रात शबे रात के रूप में उनका पूज्य दिवस है मुहम्मद के पिता एवं पूर्वज तथा वंश में शिव की पूजा होती थी, वे शिव के धर्म को मानते थे जिसे शैविस्म नाम से जाना जाता था। इस्लाम पूर्व काबा मन्दिर वार्षिक "औकाज" समारोह के अवसर पर भव्य काव्य समारोह पर कवियों को सम्मानित किया जाता था। उनकी श्रेष्ठ कविताओं को काबे की दीवारों पर उत्कीर्ण किया जाता था उसमें कविता का अंश भाग–दिल्ली के बिड़ला मन्दिर में लालपत्थर के स्तम्भ पर लिखी है।

वह अहालोलहा अजहू अरामीमन् महादेवओं।
मनोजेल इलमुनद्दीनने मीन हम व सयत्तरू।।३।।

इस मान्यता की पुष्टि करते हैं कि शिव का विकृतरूप एवं शुद्धरूप यज्ञ वेदी समस्त विश्व में विस्तृत थी। अग्नि मन्दिर यज्ञवेदी ही है चाहे वह वाकू की हो। वा पारसीजनों की।

वेद की प्रतिष्ठा छोड़ने पर अज्ञान का प्रभाव होने पर आपाधापी शुरू हुई और वेदों की परम्परा सिकुड़ने लगी और स्थिति इतनी दयनीय हुई कि "कहावत काबा में कुफ के" अनुसार वेदों के प्रचारक ही वेदों को भूल कर भ्रान्ति में फंसने लगे। उसी को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए ऋषि दयानन्द सरस्वती ने यज्ञाग्नि की बुझी अग्नि को पुनः प्रज्जलित किया, वेदों का उद्धार किया और वेदों का सत्यार्थ बताया।

पुराण पन्थी जन अभी भी संसार को वेदों से संसार को दूर रखना चाहते हैं लेकिन संसार वेदों को समझने के लिए आतुर है। इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती का उपकार आभार जिसने शिवरात्र के व्रत तोड़ने के उपरान्त सच्चे शिव को प्राप्त करने की प्रतिज्ञा की, और शिवरात्रि का प्रसाद पाया। हमें भी सन्ध्योपासना में सद्यः सिद्धिः भवेन्नः अभीशीध्र प्राप्त कराइये से साक्षातकार कराया। परमात्मा का बोध हुआ हमें भी प्रतिबोध हो यह रात्रि सभी को शिवरात्रि हो।

चौक इलाहाबाद

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

दयानन्दाब्द–193
स्थापना–1886 ई0

पंजीकरण–05 जनवरी,1897

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
(फोन/फैक्स नं0–0522–2286328)

एजेण्डा

सेवा में,
श्री समस्त पदाधिकारी/प्रतिष्ठित सदस्य/ सह-युक्त सदस्य एवं अन्तरंग सदस्य।

पत्रांक–1073 /अन्तरंग सभा की बैठक/ लखनऊः दिनांक– 14/2/17

श्रीमन् महोदय,

नमस्ते!

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, (नारायण स्वामी भवन), 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक–25 मार्च,2017 शनिवार तदनु चैत्र कृष्ण द्वादशी को प्रातः 11 बजे से उप प्रधान/कार्यवाहक प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह की अध्यक्षता में गुरूकुल वृन्दावन, मथुरा में सम्पन्न होगी, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर विचार एवं निर्णय लिये जायेंगे। आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

विषय सूचीः–

1– ईश प्रार्थना।
2– दिवंगत आत्माओं के प्रति शोक श्रद्धांजलि।
3– मेसर्स कुमार खरे एण्ड कं0, जॉच अधिकारी/चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट द्वारा प्रेषित अन्तरिम जॉच आख्या पर विचार।
4– गत अन्तरंग सभा दिनांक–28–07–2016 एवं पदाधिकारियों की बैठक दिनांक–02–12–2016 एवं 19–01–2017 की कार्यवाही की सम्पुष्टि पर विचार।
5– नवीन आर्य समाजों की प्रविष्टि/निरस्तीकरण पर विचार।
6– आय–व्यय लेखा–जोखा की सम्पुष्टि।
7– आर्य मित्र, उपदेश विभाग, विद्यार्य सभा आदि की समीक्षा।
8– कतिपय आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के सम्बन्ध में कार्यवाहक प्रधान/मन्त्री जी द्वारा लिये गये निर्णयों की संपुष्टि।
9– आर्य समाजों में नियुक्त प्रशासकों के कार्यकाल बढाने/बदलने एवं कतिपय आर्य समाजों के विवादों पर विचार।
10– आर्य समाज के प्रचार–प्रसार एवं शराब बन्दी आन्दोलन की समीक्षा एवं भावी योजना पर विचार।
11– गुरूकुल वृन्दावन, आर्य विरक्त वानप्रस्थ सन्यास आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार, प0 प्रकाशवीर शास्त्री अतिथि भवन हरिद्वार व ब्रजघाट (गढमुक्तेश्वर), महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढतल्ला, आर्य समाज भवाली (नैनीताल) एवं गुरूकुल शोले, जिला–अल्मोड़ा की प्रगति आख्या पर विचार।
12– आगामी वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) की नियत तिथि की सम्पुष्टि।
13– अन्य विषय माननीय सभा प्रधान जी की आज्ञा से।

(डॉ0 धीरज सिंह)
का0प्रधान
मोबाईल–9412744341
कार्यवाहक प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री
मोबाईल–09837402192
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

संस्थापित–1885
श्रीमद्दयानन्दाब्द–193

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

फोन नं0–0522–2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ

का

वार्षिक बृहद् अधिवेशन

पत्रांक–1074 वार्षिक बृहद् अधिवेशन–2016–17/ लखनऊः दिनांक– 14/2/ 2017

सेवा में,

सम्माननीय सभा पदाधिकारीगण, अन्तरंग सदस्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तरंग सदस्य, सभी आर्य समाजों, उप प्रतिनिधि सभाओं एवं अन्य संस्थाओं के माननीय प्रतिनिधिगण।

महोदय नमस्ते,

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक 26 मार्च,2017 दिन रविवार (चैत्र कृष्ण त्रयोदशी) को कार्यवाहक प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह की अध्यक्षता में गुरूकुल वृन्दावन, मथुरा में सम्पन्न होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि नियत तिथि, समय व स्थान पर पहुँचकर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

विषय सूची

1– उपस्थिति।
2– ईश प्रार्थना।
3– दिवंगत आर्य बन्धुओं के प्रति शोक श्रद्धांजलि प्रस्ताव।
4– गत साधारण सभा की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
5– कार्यवाहक प्रधान व सभा मन्त्री द्वारा प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
6– वार्षिक वृत्तांत 1 अप्रैल,2015 से 31 मार्च,2016 तक पर विचार व स्वीकारार्थ।
7– 01 अप्रैल,2016 से 31 दिसम्बर,2016 तक आय–व्यय स्वीकारार्थ।
8– आगामी वर्ष 2017–2018 का अनुमानित आय–व्यय स्वीकारार्थ।
9– मेसर्स कुमार खरे एण्ड कं0, जॉच अधिकारी/चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट द्वारा प्रेषित अन्तरिम जॉच आख्या पर विचार।
10– आय–व्यय लेखा परीक्षक की नियुक्ति पर विचार।
11– का0 प्रधान अथवा अन्तरंग सभा को भेजे गए विषय/प्रस्ताव पर विचार।
12– अन्य विषय का0 प्रधान जी की अनुमति से।

(डॉ0 धीरज सिंह)
का0 प्रधान
मोबाईल–9412744341
कार्यवाहक प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री
मोबाईल–09837402192
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

पृष्ठ ४ का शेष

शिवभक्त! जानें ज्योतिर्लिंगों .....

अर्थात् सूर्यः=प्रेरक, व्यापक जगदीश्वर (सूर्य इति पदनाम, निघ. ५/६, अनेन व्यवहारसिद्धेः सूर्यः), ज्योतिः=वेदज्ञान द्वारा सकल विद्या प्रकाशक, ज्ञापक है, यह ईश्वर ज्योतिः= चराचर का प्रकाशक, सूर्य := सूर्य है, सर्वव्यापक है, चराचर का उत्पादक है, स्वाहा= यह सत्य कथन है।

मन्त्र से स्पष्ट है ईश्वर ज्योतिः= ज्ञान, दीप्ति व जगत् का प्रकाशक एवं सूर्यः= प्रेरक, व्यापक है।

भौतिक सूर्य ज्योतिः

भौतिक सूर्य भी ज्योतिः कहा जाता है। इस पक्ष में मन्त्रार्थ है– सूर्य पदार्थों का उत्पादक, प्राप्त कराने वाला सूर्य, ज्योतिः= दीप्ति वाला है, ज्योतिः=दीप्ति ही, सूर्यः= जड़, चेतन का प्रेरक उत्पादक सूर्य है, स्वाहा=यह सत्य कथन है।

मन्त्र का भाव है सूर्यः= भौतिक सूर्य, ज्योतिः=प्रकाश आदि दीप्ति का साधन है, यह सूर्य आदिवस प्रकाश देता है, रात्रि के चन्द्र, तारा आदि को भी प्रकाशित करता है।

वेद के इन मन्त्रों से अधिगत है कि ज्योतिः ईश्वर है एवं अग्नि व सूर्य ज्योति हैं। अग्नि स्वरूप ईश्वर द्वारा प्रदत्त प्रकाशित ज्योतिः= दीप्ति अग्नि, सूर्य, विद्युत आदि रूपों में होती है।

सूर्य के १२ मास ज्योतिर्लिंग–

लोक में जो १२ ज्योतिर्लिंग जाने जा रहे हैं, वे ज्योति के १२ प्रकार तो सूर्यरूप अग्नि के है, अन्य किसी पदार्थ के लिंग आदि नहीं। सूर्य के इन १२ प्रकारों के द्योतक अनेक मन्त्र हैं। यथा–

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य।
ऋ० १/१६४/११।।

अर्थात् द्यां परि=पृथिवी द्वारा प्रदक्षिणा करने पर सूर्य के चारों ओर, द्वादशारम्=१२ महीनों वाले अरों से युक्त, ऋतस्य चक्रम्=संवत्सर का चक्र, वर्वर्ति= निरन्तर घूमता है, नहि तज्जराय= वह संवत्सर चक्र कभी क्षीण नहीं होता।

ईश्वर पक्ष में मन्त्र का अर्थ है द्यां परि=सूर्य के चारों ओर, द्वादशारम्=१२ महीनों वाले अरों से युक्त, ऋतस्य चक्रम्=संवत्सर काल चक्र को ईश्वर निरन्तर घुमाता है, तत्=परमेश्वर का यह संवत्सर चक्र, नहि जराय= क्षीण नहीं होता। इसी प्रकार अन्य मन्त्र में कहा–

द्वादशप्रधयश्चक्रमेकम्। ऋ० १/१६४/४८।।

अर्थात् एकम् चक्रम्= परमेश्वर संवत्सररूपी एक चक्र बनाता है, जिसमें, द्वादशप्रधयः= महीने रूप १२ परिधियाँ हैं।

मन्त्रों से सुस्पष्ट है कि १२ ज्योतियाँ १२ मासों की दीप्तियां कहीं जातीं हैं, जिन्हें परमात्मा ने निर्मित किया है। ये १२ मास ही ज्योतिर्लिंग है। १२ मासों वाला सूर्य शिव है, कल्याणकारी है। १२ मासों की साम्यता से ही १२ शिवलिंग कल्पित किये गये हैं। यदि ये यथार्थ होते, तो शिव के निरन्तर मंदिर नहीं बनाए जाते। आज जो बिना ही शिवलिंग के टुकड़ों के मन्दिर बनते जा रहे हैं, वे ज्ञापित करते हैं कि १२ शिवलिंगों की यह कोरी कल्पना है।

शिवभक्त! आँखें खोलें! यथार्थ जानें। प्रलय के पश्चात् सृष्टि के आदि में काल चक्र के ज्ञापक दीप्ति वाले सूर्य का ही उदय होता है। इस तथ्य से ज्योतिषशास्त्रविद् भलीभाँति परिचित है। अहोरात्र के जो २४ होरा हैं, उनमें सर्वप्रथम सूर्य का ही प्रथम उदय दिखया जाता है।

शिवभक्त इन १२ ज्योतियों के यथार्थ रहस्य से अनभिज्ञ हैं, तभी तो अनादि तत्त्व शिव की लिंगरूप कल्पना करके लिंगोपासना में रत हैं। अन्यच्च ज्योतिर्लिंग के प्रादुर्भूत होने की कथा कहानी कहने में लगे हैं।

महर्षि दयानन्द का ज्योतिर्ज्ञान

महर्षि दयानन्द अपूर्व योगी ज्ञानी, ध्यानी थे। उन्होंने योगबल से अनादि ज्यातिरूप ईश्वर का स्वरूप जान लिया और पहचाना। दैनिक नित्यकर्म अग्निहोत्र के मध्य यजुर्वेदीय अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा, मन्त्रों का विनियोग कर सभी के ज्ञान चक्षु भी खोल। इन मन्त्रों की व्याख्या में महर्षि दयानन्द ने लिखा–

अग्निर्जगदीश्वरः स्वाहा ज्योतिः सर्वस्मै ददाति, एवं भौतिकोऽग्निः सर्वप्रकाशकं ज्यातिर्ददाति।

सूर्यश्चराचरात्मा स्वाहा ज्योतिः सर्वात्मसु ज्ञानं ददाति। अयं सूर्यलोको ज्योतिर्दानं मूर्तद्रव्यप्रकाशनं च करोति। दया० भा० यजु० ३/६।।

अर्थात अग्नि जगदीश्वर स्वाहा= वेदवाणी व प्रकाशक पदार्थों का प्रकाश सबके लिए देता है एवं भौतिक अग्नि सब पदार्थों की प्रकाशक दीप्ति को देता है। सूर्य रूपी चराचर का आत्मा ईश्वर ज्योतिः=सभी की आत्माओं में ज्ञान देता है। यह सूर्यलोक दीप्ति का दान करता है और मूर्त पदार्थों को प्रकाशित करता है।

महर्षि दयानन्द ने ज्योतिः= प्रकाश के आधार, अग्निः=तेज के आधार पर अग्रणी परमेश्वर की प्राप्ति एवं ज्योतिः= भौतिक अग्नि व सूर्य रूप प्रकाश के साधनों का यह ज्ञान व सामर्थ्य तब प्राप्त किया था, जब उन्होंने सब की भाँति अपने पूज्य पिता कर्षण लाल जी के आग्रह पर फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि का व्रत किया था, व्रत देवता शिव का जो स्वरूप सुना था, उसे न पाकर अपना व्रत तोड़ा था और सच्चे शिव की खोज का संकल्प लिया था।

लिंगोपासना व्यभिचार व वेद विरूद्ध कर्म–

महर्षि दयानन्द व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र के बड़े परोपकारी हितैषी थे। उन्होंने शिवलिंगोंपासना को निरर्थक कर्म को विज्ञापित करते हुए जनमानस के हितार्थ लिखा है–

शिवपुराण में बारह ज्योतिर्लिंग लिखे हैं। उसकी कथा सर्वथा असंभव है। नाम धरा है ज्योतिर्लिंग और जिनमें प्रकाश का लेश भी नहीं। रात्रि को बिना दीप किये लिंग भी अंधेरे में नहीं दीखते। यह सब लीला पोप जी की है।

सत्यार्थ प्रकाश एकादश० पृ० ३२०।।

इसी प्रकार महर्षि का सन्देश है कि शिवलिंगोपासना कल्पित व्यभिचारपूर्ण कर्म है, जो सर्वथा त्याज्य है। शिवभक्त जागें! १२ ज्योतियों के सत्यस्वरूप ईश्वर, अग्नि व सूर्य को जानें, पहचानें।

प्राचार्य–पाणिनि महाविद्यालय वाराणसी–१०
२–आर्यकन्या गुरूकुल शिवगंज, सिरोही–३०६०२६
राजस्थान

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज बगहा, मिर्जापुर का ६४वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बगहा जनपद मिर्जापुर का ६४वां वार्षिकोत्सव दिनांक २५ व २६ फरवरी २०१७ को स्थान दक्षिण तरफ पुल के पास बगहाँ जनपद मिर्जापुर में बड़ी धूम धाम से मनाया गया।

कार्यक्रम में आमंत्रित विद्वतजन पं० विश्वव्रत शास्त्री लखनऊ, पं० रामाधार शास्त्री रसूलपुर, श्रीमती धर्मरक्षिता आर्या बिहार, श्री सोमेन्द्र आर्य मुगल सराय, श्री जीतन सिंह रजौली, श्री अमित शास्त्री आदि हैं।

वार्षिकोत्सव में प्रथम दिवस प्रातः ७.३० से ११.०० यज्ञ, प्रवचन दोपहर १.३० से सायं ५.०० बजे तक भजन व प्रवचन, रात्रि ७.३० से १०.०० बजे तक महिला सम्मेलन द्वितीय दिवस अन्य कार्यक्रम पूर्ववत् होकर समापन सायं ५.०० बजे डा०एस.के.सिंह निदेशक एपेक्स अस्पताल द्वारा हुआ।

वैदिक विद्वानों के अमृत वचनों को सुनकर हजारों लोगों ने जीवन सरल तथा कार्यक्रम को सफल बनाया।

महर्षि देव दयानन्द एक सच्चे गुरू थे

- खुशहाल चन्द्र आर्य

सच्चागुरू वही होता है जो अपने शिष्यों को अच्छी शिक्षा देकर अज्ञान से ज्ञान की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, कुपथ से सुपथ की ओर ले जाता है। अन्धविश्वास, पाखण्ड व मूर्तिपूजा से हटाकर ईश्वर की सच्ची उपासना जो सन्ध्या, हवन, सत्संग व अष्टांग योग हैं। उनकी ओर ले जाता है। इन कार्यों में देव दयानन्द ने अपनी एक विशेष अच्छी व अलग ही पहचान बना रखी है। यह सद्गुरू श्रृखंला आदि सृष्टि से चली आ रही है और सृष्टि के अन्त तक चलती रहेगी कारण मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है, उसको सही रास्ता दिखाने के लिए अपने से एक सच्चे गुरू की आवश्यकता पहले भी सदा रही है और आगे भी रहती रहेगी।

जैसा कि मैंने लिखा कि सद्गुरू की श्रृखंला सृष्टि के आदि से चली आ रही है। देवों के देव, पिताओं के पिता और गुरूओं के गुरू ईश्वर ने सृष्टि के आदि में, सृष्टि की पूरी रचना करने के बाद मनुष्यों की उत्पत्ति अनेक नौजवान स्त्री–पुरूषों के रूप में की जिससे आगे सृष्टि चलती रहे। तभी ईश्वर ने मनुष्यों को सही मार्ग दिखाने के लिए यानि धर्म, अर्थ, काम, को धर्मानुसार करते हुए मोक्ष जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है उसे प्राप्त करने के लिए सबसे अधिक पवित्र आत्मा वाले चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, अदित्य, अंगिरा था, उनके श्रीमुख से चार वेदों को जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, व अथर्ववेद हैं, उनको उच्चारित करवाया। वह वेद–ज्ञान उपस्थित सभी पुरूषों व स्त्रियों ने सुना, परन्तु उनमें भी ब्रह्मा जो सर्वश्रेष्ठ ऋषि थे, निकी स्मरण शक्ति बहुत तेज थी, उन्होंने इन चारों वेदों को कठस्थ कर लिया और उपस्थित लोगों को सुनाते रहे फिर यह कर्म पिता, पुत्र को, गुरू शिष्य को सुनाना लाखों वर्षों तक चलता रहा। जब स्याही, कलम, दवात, कागज का अविष्कार हो गया तब इन चारों वेदों को पुस्तक बद्धकर दिया जो अभी तक चलते आ रहे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि सृष्टि के आदि से मनुष्य–मात्र के कल्याण के लिए वेदों का ज्ञान देने वाला ईश्वर सर्वप्रथम सद्गुरू हुआ। फिर ब्रह्मा ने उन वेदों को कण्ठस्थ करके आम जनता को सुनाते रहे इसलिए दूसर सद्गुरू ब्रह्मा हुए। तत्पश्चात् त्रैता में रामायण काल में हमें दो सद्गुरू दिखाई देते है जिनके नाम हैं वशिष्ठ व विश्वामित्र। जिन्होंने रावण, कुम्भकरण, जैसे बलशाली व अन्यायी राक्षसों का संहार करने के लिए एक योजना बद्ध तरीके से श्रीराम और लक्ष्मण को राजा दशरथ से लेकर उन्हें धनुर्विद्या। तथा अन्य विद्याएं सिखाई जिससे वे रावण को उसके पूरे परिवार सहित मारने में सफल हुए जिससे आम जनता को सुखी बनाया और ऋषि मुनियों के यज्ञों को अपवित्र होने से बचाया। इसलिए ये भी सद्गुरू की श्रेणी में आते हैं। फिर हम जब आगे बढ़ते है तो द्वापर में महाभारत के समय दो गुरू दिखाई देते हैं गुरू द्रोण और गुरू कृपाचार्य पर इनको हम सद्गुरू की श्रेणी में नहीं गिनते कारण इन्होंने अपने स्वार्थ के लिए अपने कर्तव्य को त्यागकर पापी दुर्योधन का साथ देकर अधर्म का कार्य किया। तत्पश्चात् भारत के इतिहास को जब हम सुक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करते हैं तो चन्द्र गुप्त मौर्य के सदगुरू चाणक्य का नाम आता है जिसने चन्द्रगुप्त जैसे योग्य बच्चे को सुशिक्षित व शस्त्र विद्या में निपुण बनाया और जनता को सुखी बनया। इसके बाद हम आगे बढ़ते है तो शेर शिवाजी के सद्गुरू रामदास पर हमारी दृष्टि पड़ती है जिसने शेर शिवाजी को युद्ध विद्या में निपुण करके औरंगजेब जैसे पापी बादशाह के राज्य को नष्ट करवाय। फिर हम आगे चलते है तो हमारी दृष्टि उस महान् सद्गुरू चक्षु विहीन स्वामी विरजानन्द पर पड़ती है जिसने अपने योग्य शिष्य बाल ब्रह्मचारी स्वामीदयान्द को तीन वर्ष अपनी गोद में रखकर उसको वेदों की कुन्जी प्रदान की जिससे महर्षि दयानन्द ने, जो उस समय आचार्य सायण व उब्बट द्वारा वेदों के जो गलत और अश्लील भाष्य किये थे उनको गलत साबित करके, वेदों के सही भाष्य करके विश्व में वेदों का प्रकाश किया। महर्षि दयानन्द ने न केवल वेदों का सही भाष्य ही किया बल्कि अपने सद्गुरू विरजानन्द को गुरूदक्षिणा के रूप में बचन दिये थे उनको पूरी उम्र उन बचनों का पालन करते हुए विश्व में जो अज्ञान के कारण अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला था उसको रोकने की किसी में हिम्मत नहीं थी, उस समय देव दयानन्द ने अपनी जान को जोखिम में डालकर वेदों के सही अर्थ बतलाकर उस अन्धविश्वास व पाखण्ड को मिटाया/और दुखियों, असहायों व निर्बलों का सहारा बने। गाय की चीत्कार को सुना और विधवाओं के आँसू पोछे तथा आजादी का शंखनाद फूँका। इस प्रकार देश में नव जागृति का संचार किया।

महर्षि दयानन्द नव जागरण के पुरोधा कहलाए जाते हैं। जब दयानन्द अपने सद्गुरू विरजानन्द की कुटिया छोड़कर अपने कार्य क्षेत्र में उतरे, उस समय देश की स्थिति बड़ी ही नाजुक व भयावह थी। महाभारत के भीषण युद्ध में सभी विद्वान, योद्धा, आचार्य, पुरोहित आदि के मारे जाने से वेद ज्ञान प्रायः लुप्त हो गया था जिससे देश में अज्ञान व अविद्या के फैलने से अन्धविश्वास का पाखण्ड का बोलबाल हो गया था। जाति कर्म से न मानकर जन्म से मानी जाने लगी थी। स्वार्थी पण्डितों ने अपना पेट भरने के लिए अनेक मत मतान्तर चला दिये थे, जिससे कम पढ़े लिखे व अविद्वान भी विद्वान समझे जाने लगे थे। ईश्वर की सच्ची उपासना जो सन्ध्या, हवन, सत्संग व अष्टांग योग है, इनको छोड़कर उन स्वार्थी पण्डितों ने राम और कृष्ण का अश्लील व भद्दा चित्र का वर्णन करके देश में अश्लीलता का ताण्डव नृत्य हो रहा था। ऐसी स्थिति में देव दयानन्द एक सद्गुरू और एक अच्छे वैद्य के रूप में वेदों का पुनः प्रकाश करके देश को नई दिशा प्रदान की जिससे देश में नव जागृति आई और देश वेदों के प्रकाश से प्रकाशित होकर देश पुनः उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर हुआ। इसलिए देव दयानन्द जिसने देश को सही मार्ग पर चलना सिखाया और अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए वेदों की ओर लौटो का आवाहन किया जिससे देश में नवचेतना आई, इसलिए, देव दयानन्द को हम सच्चा गुरू कहें तो कई अतिश्योक्ति नही होगी। इसीलिए महर्षि अरविन्द ने कहा था कि –

मैं हिमालय की अनके चोटियां देख रहा हूँ जिनके ऊपर देश के महापुरूष बैठे हुए हैं। जो चोटी सब से ऊँची है, उस के ऊपर महर्षि देव दयानन्द बैठे दिखाई दे रहें है।

किसी कवि ने ठीक ही कहा है:

सौबार जन्म लेगे, सौ बार फन्नां होगे,
एहसान! दयानन्द के, फिर भी न अदा होगें।

पृष्ठ ३ का शेष

महर्षि दयानन्द के 12 फरवरी को जन्म दिवस .....

की बात करने का श्रेय है और देश की आजादी का आन्दोलन उन्हीं के विचारो की देन कहा जा सकती है। यह भी बता दें कि आजादी के आन्दोलन में लगभग ८० प्रतिशत आर्यसमाजी विचारों व आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित लोग थे। सरकारी विभागों की खुफिया रिर्पोटों में भी यह कहा गया कि जहां–जहां– आर्यसमाजें हैं वहीं अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत, अशान्ति या unrest है। यह भी तथ्य है कि आजादी के अहिंसात्मक आन्दोलन के आद्य नेता गोपाल कृष्ण गोखले थे। गांधी जी उनके शिष्य माने जाते हैं। गोखले जी महादेव गोविन्द रानाडे के शिष्य थे और रानाडे महोदय महर्षि दयानन्द के साक्षात् शिष्य थे। उन्होंने ही स्वामी जी को पूना बुलाकर उनका आतिथ्य किया और वहा उपदेश कराये थे। इस प्रकार आजादी का अहिंसात्मक आन्दोलन भी ऋषि की शिक्षाओं व प्रेरणाओं से आरम्भ होकर महादेव रानाडे, गोखले जी , गांधी जी से होता हुआ, सरदार पटेल, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द जी आदि द्वारा विस्तार को प्राप्त हुआ। यदि गरम दल व क्रान्तिकारी नेताओं की बात करें तो क्रान्तिकारियों के आद्य गुरू प० श्यामजी कृष्ण वर्मा लन्दन गये थे और वहीं से वह क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन करते थे। अंग्रेज विरोधी अपनी गतिविधियों के कारण ही उन्हें लन्दन छोड़ना पड़ा था और जेनेवा में उनकी मृत्यु हो हुई थी।

महर्षि दयानन्द का देश की उन्नति वा उत्थान में सर्वाधिक योगदान हैं। उन्होंने न केवल धार्मिक अन्धविश्वासों पर ही प्रहार किया अपितु देश को अज्ञान व अविद्या से निकालने के लिए 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये' जैसा क्रान्तिकारी सिद्धान्त भी दिया। अतीत में वैदिक धर्मी हिन्दुओं का लोभ व बल प्रयोग करके किया गया धर्मान्तरण और उसके दुष्प्रभावों से देश व समाज को बचाने के लिए ऋषि दयानन्द ने शुद्धि का मंत्र दिया था। पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि अनके आर्यनेताओं ने प्राणपण से शुद्धि का क्रियात्मक प्रचार किया और इसी कारण विधमिर्यों ने उन्हें शहीद भी किया। देश हित का ऐसा कोई कार्य नहीं है जो महर्षि दयानन्द जी ने न किया हो। उन्होंने देशवासियों की सोई हुई आत्माओं को जगाया था। उनका देश पर जो ऋण है, उसे कभी चुकाया नहीं जा सकता। जब तक यह संसार विद्यमान है, उनकी कीर्ति अक्षुण हैं हम आज उनके जन्म दिवस पर उनको अपनी श्रद्धांजलि देते हैं। सनातन वैदिक धर्मी बन्धुओं से भी हम विनम्र निवेदन करना चाहते हैं कि यदि इतिहास में जीवित रहना चाहते हैं तो महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों को सर्वाश में अपनायें अन्यथा यह जाति बची रहेगी, इसमें हमें संशय हैं 'धर्मो एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।' (मनुस्मृति) जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। जो धर्म की रक्षा नहीं करता उसकी रक्षा धर्म भी नहीं करता अर्थात् धम। द्वारा रक्षित न होने से वह बच नहीं सकता है। आज इसे जानने, समझने व इस पर आचरण की आवश्यकता है। ओ३म् शम्।

www.thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्स: ०५२२-२२८६३२३
प्रधान- ०६४१२६७८५७१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, सम्पादक- ६४५१८८१६७७
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

आर्य समाज मन्दिर दादों (अलीगढ़) का 70वां वार्षिकोत्सव

प्रसन्नता के साथ आपको आमंत्रित किया जाता है कि आर्य समाज मन्दिर दादों (अलीगढ़, उ०प्र०) का ७० वाँ वार्षिकोत्सव बड़ी धूम–धाम के साथ ५ से ७ मार्च २०१७ को मन्दिर परिसर में मनाया जायेगा। जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान तथा तपस्वी सन्यासियों की गरिमामय उपस्थिति होगी। आपसे विशेष अनुरोध है कि इस धार्मिक कुम्भ मेला में पधार कर अपने जीवन उपयोगी उपदेश तथा भजन, श्रवण कर अधिक से अधिक परिवारों व ईष्ट मित्रों सहित पधार कर वार्षिकोत्सव की सफलता में चार चाँद लगा कर आयोजकों को प्रोत्साहित करें। इस त्रय दिवसीय कार्यक्रम में प्रातः महायज्ञ होगा। यज्ञमान बनने के इच्छुक, सज्जन अग्रिम स्थान प्रधान श्री भगत सिंह से आरक्षित करा लें। धार्मिक उत्सव में भाग लेने से आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहें इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

अपील

भव्य यज्ञ शाला निर्माणाधीन है। यज्ञ शाला के निर्माण में सहयोग करने वाले दानी महानुभाव दिल खोलकर दान कर सहयोग करने की अनुकम्पा करें पुनः शुभ कामनाओ सहित।

अपका– ऋषि पाल शास्त्री

शुभाशीर्वाद शुभकामनायें

१. आर्य समाज पिलखुवा के पूर्व प्रधान अशोक कुमार आर्य मन्त्री जिला सभा हापुड़ के सुपुत्र अर्जुन कुमार आर्य का शुभ विवाह ३० जनवरी को ग्रा० बाद में सम्पन्न हुआ। सभा मन्त्री एवं सभा का०वा० प्रधान डा० धीरज सिंह जी जिला प्रधान विकास आर्य सहित सैकड़ों लोगों ने इस वैदिक विवाह संस्कार पर नव दम्पती को आशीर्वाद प्रदान किया।

२. रोहित कुमार आर्य सुपुत्र कर्मवीर सिंह आर्य समाज आलम नगर, बहादुरगढ़ जि० हापुड़ का शुभविवाह ३१ जनवरी को सम्पन्न हुआ। सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने पधार कर सभा की ओर से शुभ आशीर्वाद प्रदान किया।

३. आर्य समाज बहादुरगढ़ के पूर्व मन्त्री गुरूकुल पूठ के पर्वू कोषाध्यक्ष स्व० प्रदीप कुमार आर्य के सुपुत्र प्रद्युम्न कुमार आर्य का शुभ विवाह ६ फरवरी को प्रीति आर्या के साथ सम्पन्न हुआ आचार्य प्रमोद जी ने संस्कार सम्पन्न कराया, सभा की ओर से स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने घर पर पहुँचकर बच्चों को शुभाशीर्वाद प्रदान किया। उनके दादा जी मुनीष रामफल सिंह को भी बधाई दी।

निगम् नोडम् वेदगुरूकुलम् का द्वादश (12वां) वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरूकुल परम्परा को आगे बढ़ाने हेतु कृत संकल्प, महर्षि दयानन्द सरस्वती के याग संकल्प को कात्यायन श्रौत सूत्र के आधार पर निगम नीडम् वेद गुरूकुल दयानन्द मार्ग, पिंडिचेड़, गज्वेल, सिद्धिपेट तेलगांणा में पूर्णमासेष्टि (शुष्केष्टि) का अनुष्ठान अपने १२वें वार्षिकोत्सव के रूप में दि० २६ फरवरी २०१७ को मना रहा है।

वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि श्री मणिकोण्डा लक्ष्मी कान्ता राव जी, विशिष्ट अतिथि योगाचार्य श्री धर्मवीर जी, सम्माननीय अतिथि श्री शिवकुमार, श्री नागिरेड्डि जी, श्री महिपाल रेड्डि जी, आमन्त्रित विद्वान् स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी, स्वामी गणेशानन्द सरस्वती जी, आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी, माता श्री निर्मला योग भारती जी, आ० आनन्द प्रकाश जी, आ० श्रवण कुमार जी, आ० नीरजा जी, आचार्य भवभूति जी, आचार्य सुनीति जी, आ० सविता जी, प० सुम्नार्थी जी, श्री विश्वेन्द्र आर्य जी, श्रीमती–रविकण्टि ज्योतिश्री जी, श्रीमती श्री ओरिगण्टि लक्ष्मी जी, श्रीमती श्री वैष्णवी धर्मतेज जी, श्री पं० सत्यदेव जी, श्री प० विश्व रूप जी आदि हैं।

इस श्रौतदर्शपूर्ण मासेष्टि (शुष्केष्टि) यज्ञ कार्यक्रम प्रातः ८.०० बजे से आरम्भ होकर सायं ५.०० बजे समाप्त होगा। इस यज्ञ में सौमनस्य (सात्विक मनोभावों) को चाहने वाले एवं दिव्यता के इच्छुक सभी बन्धु बान्धव सादर आमंत्रित हैं।

हे दिव्य सूर्यसम आर्यसमाज!

– प्रियवीर हेमाइना

हे आर्यसमाज! आर्यसमाज!
हे दिव्य सूर्यसम आर्यसमाज!
हे वैदिक संस्कृति के साज!
तूने किये महान् ही काज।।१।।
तेरे सिद्धान्तों से थराते
टोने बाज व धोखेबाज।
मैं इसीलिए तो कहता हूँ
तू ही है समाज अधिराज।।२।।
तू है रक्षक अबलाओं का।
कन्याओं हेतु आर्यसमाज!
देश में किया शिक्षा का राज।।३।।
हिन्दी भाषा को तूने ही,
संज्ञा दी आर्यभाषा की।
है प्रतिष्ठित जो देश में आज,
पहने राष्ट्र–भाषा का ताज।।४।।
तूने दिये हिन्दी के वक्ता,
प्रकाशवीर जैसे प्रवक्ता।
भाषण की अनुपम आवाज,
कहां सुनेंगे सर्वजन आज?।।५।।
"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का,
काज है तेरा महा सुकाज।
इसी से तो होगा पुनः यहाँ,
चक्रवर्ती आर्यों का राज।।६।।
हो यहाँ सात्विकता का राज,
पुनः पाएँ कृष्ण योगिराज।
हो सुखमय यह लोकराज,
कर रहा प्रयत्न आर्यसमाज।।७।।

गुरूकुल म०वि०पू० गढ़मुक्तेश्वर हापुड, वार्षिक सम्मेलन 17, 18, एवं 19 मार्च 2017

महोदय,

आप लोगों को जानकर प्रसन्नता होगी कि आपके प्रिय गुरूकुल पूठ निकट गढ़मुक्तेश्वर, जिला हापुड़, का वार्षिक सम्मेलन १७, १८ एवं १६ मार्च २०१७ दिन शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार को कुलभूमि में उत्साह पूर्वक सम्पन्न हो रहा है। आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं सम्मेलन में आर्य जगत् के मूर्धन्य सन्यासी एवं विद्वान् उपदेशक भजनोपदेशक आर्य नेताओं को भी अमन्त्रित किया गया है इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ भी सम्पन्न होगा उसकी पूर्णाहुति १६ मार्च को प्रातः १० बजे होगी। गुरूकुल के ब्रह्मचारियों का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन प्रभावशाली रहता है। गुरूकुल में यजमान बनने के इच्छुक सम्पर्क करें भोजन आवास की व्यवस्था कुल भूमि में ही रहेगी। गुरू द्रोणाचार्य जी की तपस्थली गंगाकिनारे गढ़मुक्तेश्वर के ही निकट है गढ़ से बसों की सुविधा प्राप्त रहती है गढ़– स्याना मार्ग पर डहरा कुटी से भी सवारी सुविधा रहेगी संस्था आपके सहयोग की सदैव प्रतीक्षा करती रहेगी। आदर्श गौशाला एवं छात्रों का भोजन तथा यज्ञ भण्डारे हेतु आप से पूर्ण सहयोग की अपेक्षा करता हुआ आपके दर्शनों की प्रतीक्षा कार्यक्रम में करता रहूँगा।

आपका दर्शनाभिलाषी

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
संचालक– गुरूकुल पूठ–हापुड़
मंत्री आर्य प्रतिनिध सभा, उ०प्र०
सम्पर्क – ६८३७४०२१६२, ६४१९०२६७७५

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।